महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह
Prof. K.K. Singh
संकायाध्यक्ष, साहित्य विद्यापीठ
Dean, School of literature

पत्रांक : 061/2015/सा.प.जा./02/
दिनांक : 08/01/2016

हिंदी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम सूचना

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में महामना पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा मिशन के अंतर्गत क्रियाशील हिंदी का शिक्षण-प्रशिक्षण केंद्र द्वारा **'मध्यकालीन हिंदी साहित्य का वर्तमान'** विषय पर 12 दिवसीय (16-28 फरवरी, 2016) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के इच्छुक शिक्षक उक्त विषय के संबंध में लगभग 500 शब्दों में अपना अभिमत (राइट अप), विश्वविद्यालय/महाविद्यालय से अग्रसारित आवेदन पत्र एवं रु. 1000 का बैंक ड्रॉफ्ट **(वित्ताधिकारी, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा के पक्ष में देय)** संलग्न कर स्पीड पोस्ट के द्वारा दिनांक **30 जनवरी 2016** तक अवश्य भेजें। निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा। **चयन का आधार आपका अभिमत (राइट अप) होगा।**

चयनित अभ्यर्थियों को ए.सी. तृतीय श्रेणी (III A.C) का यात्रा-व्यय दिया जाएगा, आवास तथा भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाएगी।

पत्राचार पता : अधिष्ठाता, साहित्य विद्यापीठ, म.गा.अं.हिं.वि, वर्धा, 442001

016 जावक 666
दिनांक 8/1/2016

(कृष्ण कुमार सिंह)

संलग्नक :

1. हिंदी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम : अवधारणात्मक प्रपत्र
2. आवेदन पत्र का प्रारूप

गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा - 442 005 (महाराष्ट्र)
फोन नं.- +91 - 7152-232974 फैक्स नं.- +91 - 7152-230903 मो.- +91 - 9404354261
ई-मेल : kks5260@gmail.com, sahityavibhag@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

अवधारणात्मक प्रपत्र

हिंदी विषय में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (16 फरवरी 2016 से 28 फरवरी, 2016)

मध्यकालीन साहित्य कई दृष्टियों से आधुनिक कवियों के लिए प्रतिमान रहा है। यह सही है कि सारा का सारा अतीत वर्तमान में मौजूद नहीं रहता है लेकिन उसके कुछ हिस्से अवश्य मौजूद रहते हैं। संकटकाल में हमें अपने अतीत से ही शक्ति प्राप्त होती है। अतीत का जो हिस्सा हम उपयोग में लाते हैं वहीं परंपरा कहलाती है। दुनिया का कोई भी साहित्य परंपरा से अलग नहीं होता। बल्कि उसका अगला चरण होता है। इसी अर्थ में आधुनिकता को परंपरा का अगला चरण मान सकते हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य इस अर्थ में आधुनिक साहित्य से जुड़ा हुआ है। यह अकारण नहीं है कि हिंदी साहित्य के मध्यकाल को स्वर्णकाल की संज्ञा दी गई है। आधुनिक कविता मध्यकालीन बोध एवं चेतना से पूरी तरह विच्छिन्न नहीं है। त्रिलोचन अपनी कविता में कहते हैं - 'तुलसी बाबा भाषा मैंने तुमसे सीखी, मेरी सजग चेतना में तुम रमे हुए हो।"

प्रगतिशील कवि त्रिलोचन की कविता में तुलसीदास का रमना, नागार्जुन की चेतना में कबीर की उपस्थिति, महादेवी की कविता में मीरा का दर्शन आदि इस बात के प्रमाण हैं कि मध्यकालीन कविता की अर्थवत्ता प्रेरणा के रूप में कहीं न कहीं आज के जीवन में भी मौजूद है। मध्यकालीन साहित्य को आलोचकों ने अपनी-अपनी दृष्टि से देखने की कोशिश की है। लेकिन आलोचना का प्रमुख धर्म देखे हुए को पुनः देखना भी है। अपने समय के सवालों के संदर्भ में अपनी परंपरा का मूल्यांकन और उसकी सर्जनात्मकता में से सार्थक तत्वों की खोज आलोचना का प्रमुख धर्म है। आलोचना सतत चलने वाली प्रक्रिया है। बदले हुए समय और परिवेश में पुनः पुनः मूल्यवत्ता की खोज ही आलोचना को जीवन से जोड़ती है।

हिंदी विश्वविद्यालय **"मध्यकालीन हिंदी साहित्य का वर्तमान"** विषय पर एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन करने जा रहा है क्योंकि पुराने को जाने समझे बिना नए का निर्माण संभव नहीं है। इसलिए मध्यकालीन साहित्य को अपने समय के साथ जोड़कर देखना आवश्यक है। आज के समय में मध्ययुगीन साहित्य पर विचार करने पर पश्चिमी आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, उत्तर औद्योगिक समाज की समस्याओं के संदर्भ में नए सूत्र खोजे जा सकते हैं। इस देश को एकता में बांधने का कार्य मध्यकालीन कवियों ने ही किया है जिसका मूल्यांकन आज भी एक चुनौती है। इसलिए मध्यकालीन हिंदी साहित्य के सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की व्यापकता और गहराई को सम्यक रूप से समझे बिना भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों को ठीक-ठीक नहीं पहचाना जा सकता है। आज मध्यकालीन कविता का पुन: पाठ जरूरी है क्योंकि आगे की राजनीतिक और सांस्कृतिक घटनाओं पर उसका गहरा प्रभाव है।

भाषा एवं काव्यरूपों की दृष्टि से भी मध्यकालीन हिंदी साहित्य वैविध्यपूर्ण है। काव्य के मूल्यांकन में काव्यशास्त्र की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आचार्यों ने अपनी-अपनी दृष्टि से उसकी केंद्रीयता पर विचार किया है। इसलिए मध्ययुगीन हिंदी काव्य को नए प्रश्नों, आज की नयी समस्याओं, नए जीवन संदर्भों के आलोक में देखना-परखना जरूरी है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)
फोन नं.- 07152-232974 फैक्स नं.- 07152-230903 मो.- 9404354261
ई-मेल : kks5260@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

महामना पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा मिशन

(हिंदी का शिक्षण-प्रशिक्षण केंद्र)
(टीचिंग लर्निंग सेंटर फॉर हिंदी स्टडीज)

हिंदी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम हेतु आवेदन पत्र

अपना अद्यतन फोटो लगाएं

पाठ्यक्रम का शीर्षक :

01. शिक्षक का पूरा नाम : ....
    (अंग्रेजी में) : ....

02. पिता / पति का नाम : ....

03. माता का नाम : ....

04. जन्म दिनांक : ....

05. श्रेणी : ....

06. पुरुष / महिला : ....

07. विभाग / विषय : ....

08. विश्वविद्यालय/कॉलेज का नाम : ....

09. स्थायी पता (आवासीय) : ....

    पिन : ....
    टेलीफोन/मोबाइल (कार्यालय एवं निवास) : ....
    ई-मेल : ....

10. रोजगार : ....
    (क) पदनाम : ....
    (ख) स्थिति: पार्ट टाइम / तदर्थ / स्थायी (नियमित) : ....
    (ग) नियमित नियुक्ति की तिथि : ....

11. संस्थान/कॉलेज यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त है या नहीं ? हां/ नहीं : ....

12. (i) आपने अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया है? : ....
    (ii) स्थान और दिनांक जहां भाग लिया : ....

13. (i) आपने पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया है ? : ....

14. (i) शोध प्रबंध का शीर्षक (अगर कोई है) : ....
    (ii) विशेषज्ञता क्षेत्र (अगर कोई है) : ....

15. आवास की आवश्यकता है? हां / नहीं : ....

....

अग्रेषण अधिकारी (हस्ताक्षर एवं मुहर) | अभ्यर्थी के हस्ताक्षर (दिनांक सहित)

• आवेदन पत्र के साथ रु. 1000 का बैंक ड्राफ्ट "वित्ताधिकारी, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा के पक्ष में देय प्रस्तुत करें।
पत्राचार पता : अधिष्ठाता, साहित्य विद्यापीठ, म.गा.अं.हिं.वि, वर्धा, 442001